बी.पी.ए.एस.–184: संभारण प्रबंधन
अध्यापक जांच सत्रीय कार्य

कोडः : बी.पी.ए.एस–184
सत्रीय कार्य कोड : ए.एस.एस.टी./टी.एम.ए./ जुलाई–2026 और जनवरी–2027
पूर्णांकः 100

इस सत्रीय कार्य में तीन भाग है। आपको तीनों भागों के सभी प्रश्नों के उत्तर देने है।

सत्रीय कार्य–क

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. संभारण प्रबंधन का अर्थ, क्षेत्र और महत्व की चर्चा कीजिए। 20
2. प्रभावी प्रबंधन और कुशल परिवहन में आने वाली चुनौतियों को स्पष्ट कीजिए। 20

सत्रीय कार्य–ख

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए।

3. संभारण का अर्थ और प्रकारों को स्पष्ट कीजिए। 10
4. आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन की चुनौतियों की चर्चा कीजिए। 10
5. हरित संभारण की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए और उसके उद्देश्यों का वर्णन। 10

सत्रीय कार्य–ग

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में डीजिए।

6. संभारण प्रबंधन चक्र के विभिन्न भागों की व्याख्या कीजिए। 6
7. प्राप्ति और खरीद के मध्य अन्तर स्पष्ट कीजिए। 6
8. सामग्री हैंडलिंग का महत्व की समझाइए। 6
9. भांडागार के कार्यों का वर्णन कीजिए। 6
10. वस्तु सूची नियंत्रण की तकनीकों की चर्चा कीजिए। 6

1. संभारण प्रबंधन का अर्थ, क्षेत्र और महत्व की चर्चा कीजिए। **20**

उत्तर

संभारण प्रबंधन से आशय वस्तुओं, सेवाओं तथा उनसे संबंधित सूचनाओं के प्रवाह को इस प्रकार नियोजित, लागू और नियंत्रित करना है कि वे उद्गम बिंदु से उपभोग या उपयोग के स्थान तक सही समय, सही मात्रा, सही दशा और उचित लागत पर पहुँच सकें। केवल सामान को एक स्थान से दूसरे स्थान तक भेज देना संभारण नहीं है। इसमें प्राप्ति, भंडारण, सामग्री हैंडलिंग, वस्तु-सूची नियंत्रण, पैकेजिंग, परिवहन, वितरण, सूचना और ग्राहक सेवा जैसी परस्पर जुड़ी गतिविधियाँ शामिल होती हैं। इसलिए संभारण प्रबंधन का मुख्य उद्देश्य ग्राहक की आवश्यकता पूरी करते हुए संगठन की कुल लागत और संसाधनों के उपयोग को संतुलित रखना है।

संभारण का आधार प्रायः ‘सात सही’ माने जाते हैं—सही उत्पाद, सही मात्रा, सही दशा, सही स्थान, सही ग्राहक, सही समय और सही लागत। यदि इनमें से किसी एक पक्ष में भी गंभीर कमी हो तो पूरी वितरण व्यवस्था प्रभावित हो सकती है। उदाहरण के लिए, कोई वस्तु सही मात्रा में उपलब्ध हो, पर वह ग्राहक तक देर से पहुँचे, तो बिक्री और ग्राहक विश्वास दोनों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। इसी प्रकार बहुत अधिक स्टॉक रखने से पूँजी फँसती है, जबकि बहुत कम स्टॉक रखने से मांग पूरी नहीं हो पाती।

संभारण प्रबंधन का कार्यक्षेत्र

संभारण प्रबंधन का क्षेत्र काफी व्यापक है। इसकी पहली महत्वपूर्ण गतिविधि प्राप्ति और आपूर्तिकर्ता प्रबंधन है। संगठन को यह तय करना होता है कि आवश्यक कच्चा माल, पुर्जे, सेवाएँ या अन्य संसाधन कहाँ से, किस गुणवत्ता में, कितनी मात्रा में और किन शर्तों पर प्राप्त किए जाएँ। उपयुक्त आपूर्तिकर्ता का चयन, मूल्य और शर्तों पर बातचीत, आदेश देना तथा सामग्री की प्राप्ति इस क्षेत्र में आते हैं।

दूसरा क्षेत्र वस्तु-सूची प्रबंधन है। संगठन को कच्चे माल, अर्धनिर्मित माल और तैयार माल का ऐसा स्तर रखना चाहिए जिससे कार्य न रुके और अनावश्यक भंडारण भी न हो। मांग का अनुमान, पुनःआदेश स्तर, सुरक्षा स्टॉक और स्टॉक अभिलेख इस कार्य को नियंत्रित करने में मदद करते हैं।

तीसरा क्षेत्र सामग्री हैंडलिंग और पैकेजिंग है। गोदाम या उत्पादन स्थल के भीतर सामग्री की प्राप्ति, उठाने, रखने, छाँटने और भेजने की प्रक्रिया सुरक्षित तथा कम लागत वाली होनी चाहिए। सही पैकेजिंग